eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA PUBLICATION

RESEARCH ARTICLE

योगाग्नि एवं यज्ञाग्नि: एक विवेचनात्मक अध्ययन

मधु [1*]

[1] शोधार्थी, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ हरयाणा, महेन्दरगढ़, हरयाणा, भारत

सारांश - भारतीय संस्कृति के प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद का आरंभ अग्नि की स्तुति के साथ ही हुआ है। इस उच्चस्तरीय ऊर्जा को वेदों में यज्ञ के तत्वदर्शन में यज्ञाग्नि के रूप में, तथा योग शास्त्रों में योगाग्नि के रूप में दर्शाया गया है। योगाग्नि एवं यज्ञाग्नि की परिभाषा एक समग्र चिंतन है, परंतु एक स्थान पर इनका वर्णन नहीं मिलता, जिससे यह विषय गंभीर अध्ययन एवं पर्यवेक्षण की माँग करता है।

योगाग्नि उच्चस्तरीय ऊर्जा है, जो उच्चस्तरीय योग साधनाओं से प्राप्त की जा सकती है। आत्मा का परमात्मा से मिलन जिस ऊर्जा को जन्म देता है वह योगाग्नि है। यज्ञाग्नि एक उच्चस्तरीय ऊर्जा है, जो अन्तः के सुप्त सामर्थ्यों को जगाने में उपयुक्त होती है। यज्ञ की अग्नि यज्ञाग्नि का स्वरूप धारण करती है, जो अन्तर्यज्ञ एवं बहिर्यज्ञ दोनों का प्रयोजन सिद्ध करती है। जो चेतना को प्रभावित करे उसे यज्ञाग्नि कहते हैं।

कुण्डलिनी को प्राणाग्नि या योगाग्नि कहा गया है। जो ब्रह्मांड में है, वही पिंड में भी है। मेरुदंड के आश्रय पर मूलाधार और सहस्रार के मध्य बहने वाली ऊर्जा ही कुण्डलिनी है। कुण्डलिनी साधना ही वह सुगम और सहज मार्ग है, जिसके माध्यम से समष्टिगत प्राण से स्वयं को ऊर्जावान, प्रकाशवान बनाया जा सकता है। अग्नि (यज्ञाग्नि) और प्राणवायु के आघात से प्रसुप्त कुण्डलिनी जाग्रत होती है, जिससे सहस्रार तक का वेधन संभव होता है और मोक्ष प्राप्त होता है।

भारतीय विचारधारा में कुण्डलिनी को पिंड तक सीमित न कर ब्रह्मांड तक पाँच आयामों में व्यक्त किया गया है। उसकी व्याख्या पाँच नामों से की जाती है — प्राणविद्युत, जीवनीशक्ति, योगाग्नि, अन्तःऊर्जा, ब्रह्मज्योति। कुण्डलिनी का तीसरा नाम है योगाग्नि, जिसे तपश्चर्या के आधार पर प्रयत्नपूर्वक प्रकट किया जाता है। त्रिपदा गायत्री की ऊर्जा — कालाग्नि, प्राणाग्नि, योगाग्नि के रूप में — तथा कुण्डलिनी की ब्रह्म ऊर्जा के साथ अभिव्यक्ति प्रस्तुत शोध में प्रस्तुत है। योगाग्नि और यज्ञाग्नि की उच्चस्तरीय ऊर्जा को भी तीन आयामों में समझने हेतु पिण्ड-ब्रह्माण्ड की ऊर्जा के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक सन्दर्भ दिया गया है। यज्ञाग्नि एवं योगाग्नि एक ही उच्चस्तरीय ऊर्जा को इंगित करते हैं। योग साधनाओं द्वारा अथवा यज्ञ अनुष्ठानों द्वारा यज्ञाग्नि–योगाग्नि की पिंड से परे ब्रह्माण्ड ऊर्जा के परिप्रेक्ष्य में प्रतिष्ठापना हो जाती है।

कूट शब्द - योगाग्नि, यज्ञाग्नि, कुण्डलिनी, त्रिपदा गायत्री, ब्रह्म ऊर्जा, प्राणाग्नि, योग साधना, यज्ञ प्रक्रिया, आध्यात्मिक ऊर्जा, वेद, उपनिषद

*CORRESPONDENCE
Address PhD Research Scholar, Central University of Haryana, Mahendergarh, Haryana, India. Email: madhuyoga42@gmail.com

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2025 Madhu
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में अग्नि का महत्व सर्वाधिक है। भारतीय संस्कृति के प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद का आरंभ भी अग्नि की स्तुति के साथ ही हुआ है। भारतीय शास्त्रों में इस अग्नि को तीन स्तरों में बाँटा गया है—1. आधिभौतिक, 2. आधिदैविक, 3. आध्यात्मिक। अग्नि का आधिभौतिक स्वरूप स्थूल आँखों से बाह्य अग्नि के रूप में अग्निहोत्र में दिखाई देता है। साथ ही, अग्नि का आधिदैविक एवं आध्यात्मिक स्वरूप वेदों में अग्नि के मंत्रों से अभिव्यक्त होता है, जो एक उच्चस्तरीय ऊर्जा की ओर संकेत करता है। इस उच्चस्तरीय ऊर्जा को वेदों में यज्ञ के तत्वदर्शन में यज्ञाग्नि के रूप में तथा योग शास्त्रों में योगाग्नि के रूप में दर्शाया गया है [1, 2]।

पौराणिक उदाहरणों में, राजा दक्ष प्रजापति द्वारा भगवान शिव का अपमान करने हेतु किए गए यज्ञ में माता सती द्वारा यज्ञाग्नि में प्राणों की आहुति देने की घटना प्रमुख है। इसी प्रकार, रामायण में शबरी के नवधा भक्ति उपदेश के पश्चात योगाग्नि द्वारा पंचमहाभूतों में लीन हो जाने का उल्लेख अग्नि की आध्यात्मिक महत्ता को रेखांकित करता है।

योगाग्नि एवं यज्ञाग्नि की परिभाषा एक समग्र चिंतन है, परंतु एक स्थान पर इनका वर्णन नहीं मिलता, जिससे यह विषय गंभीर अध्ययन एवं पर्यवेक्षण की माँग करता है, क्योंकि योग एवं यज्ञ के सही प्रयोजन हेतु इन दोनों अग्नियों का गंभीर आध्यात्मिक महत्व है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य योगाग्नि एवं यज्ञाग्नि की परिभाषा, प्रक्रिया, प्रणाली, विशेषताओं एवं गुणों का सम्यक रूप से विश्लेषण करना है। इन दोनों धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह जानने का प्रयास किया गया है कि वे किस प्रकार एक-दूसरे से सहसंबद्ध हैं।

योगाग्नि एवं यज्ञाग्नि – उच्चस्तरीय ऊर्जा

योगाग्नि

योग का मूल उद्देश्य चित्त की वृत्तियों का निरोध करना है। इसके लिए अष्टांग योग, तप–स्वाध्याय–ईश्वरप्रणिधान, अभ्यास–ज्ञान–वैराग्य का मार्ग पतंजलि योगसूत्र में बताया गया है।

योगाग्नि एक उच्चस्तरीय ऊर्जा है, जो उच्चस्तरीय योग साधनाओं से प्राप्त की जा सकती है। इसे विभिन्न शास्त्रों में वर्णित किया गया है। वस्तुतः कुण्डलिनी भी एक विशिष्ट प्रकार की योगाग्नि है, जिसके जागरण से व्यक्ति के अंतः क्षेत्र में उन्नति होती है, जो उसे भौतिक और आत्मिक रूप से परिपूर्ण कर देती है। आत्मा का परमात्मा से मिलन जिस ऊर्जा को जन्म देता है, वह योगाग्नि है। मूलाधार को शक्ति और सहस्त्रार को शिव कहा जाता है; इन दोनों को जोड़ने वाली शक्ति का नाम कुण्डलिनी है। मनुष्य शरीर में मूलाधार की ऊर्जा के सहस्त्रार की ऊर्जा से मिलने पर वह कुण्डलिनी ऊर्जा कहलाती है, और यही कुण्डलिनी शरीर में योगाग्नि होती है [1]।

> योगाग्निर् दहति क्षिप्रं यशेषं पापपुञ्जयम्।
> प्रसन्नं जायते ज्ञानं ज्ञानाग्निः निर्वाणमृच्छति॥
> — कूर्म पुराण

अर्थात् योगाग्नि में पापों का समूह जल जाता है। तब निर्मल ज्ञान प्राप्त होता है और उससे ब्रह्मनिर्वाण मिल जाता है।

> न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः।
> प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्॥
> — श्वेताश्वतर उपनिषद् 2.12

योगाग्निमय शरीर प्राप्त होने पर उसे कोई रोग नहीं होता, न ही वृद्धावस्था आती है और न मृत्यु।

योग साधना से उत्पन्न अग्नि ही योगाग्नि है। कुण्डलिनी जागरण उसी के माध्यम से होता है; उसी को योगाग्नि कहते हैं।

यज्ञाग्नि

प्रथम और प्रमुख धर्मशास्त्र ऋग्वेद के प्रथम मंत्र के प्रथम चरण में यज्ञाग्नि को पुरोहित कहा गया है — पुरोहित अर्थात मार्गदर्शक। यज्ञाग्नि एक उच्चस्तरीय ऊर्जा है, जो अंतः के सुप्त सामर्थ्यों को जगाने में उपयुक्त होती है [2]।

मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक रोगों की निवृत्ति में यज्ञाग्नि का महत्व रहा है [3]। साथ ही, अध्यात्म का प्रत्यक्ष माध्यम यज्ञ है [4]। साधक अंतरयज्ञ द्वारा पवित्र, तपस्चर्या युक्त साधनामय जीवन जीते हुए अग्नि की आराधना करता है, तब यज्ञ की अग्नि यज्ञाग्नि का स्वरूप धारण करती है, जो अंतरयज्ञ एवं बहिर्यज्ञ दोनों का प्रयोजन सिद्ध करती है। व्यक्तित्व के अंतरंग और बहिरंग में प्रखरता भर देने के लिए अंतरयज्ञ, जिसे योगाग्नि एवं कुण्डलिनी भी कहा जा सकता है, और यज्ञाग्नि — दोनों की आवश्यकता तत्त्वदर्शियों ने समझी है [5, 6]।

सांसारिक कार्यों में अग्नि की प्रत्यक्ष ऊर्जा आभा ही काम आती है, जबकि आध्यात्मिक प्रयोजनों में उसके साथ जैव चेतना का समावेश करना पड़ता है। जो चेतना को प्रभावित करे, उसे यज्ञाग्नि कहा जाता है [6]।

योगाग्नि, यज्ञाग्नि एवं कुण्डलिनी

योगाग्नि एवं कुण्डलिनी

कुण्डलिनी को प्राणाग्नि या योगाग्नि कहा गया है। उसके जागरण को लेकर योगमय उच्चस्तरीय जीवन जीने की बात शास्त्रों में आती है। हमारे शरीर में प्राणतत्त्व का केंद्र मूलाधार में स्थित कुण्डलिनी है। यही मनुष्य में उच्चस्तरीय समर्थता का आधार भी है [7]।

कुण्डलिनी की स्वाभाविक प्रकृति ऊर्ध्वगामी है, पर यदि उपेक्षा की जाए तो वह निष्क्रिय भी पड़ी रह सकती है। यहाँ तक कि मार्ग अवरुद्ध रहने पर वह नीचे की ओर भी खिसक सकती है। कभी-कभी वह आवरण वेधकर अपने लिए बहिर्गमन का मार्ग भी बना सकती है [7]।

जो ब्रह्मांड में है, वही पिंड में भी है। आकाश का सूर्य सहस्रार—मस्तिष्क है, तो पृथ्वी एवं समुद्र की तरह मूलाधार। ये दोनों अपना आदान–प्रदान क्रम जारी रखने के लिए जिस मेरुदंड का आश्रय लेते हैं, वही कुण्डलिनी है। हठयोग के अनुसार, उसी के मध्यवर्ती भँवर चक्रवात षट्चक्र हैं। ये ऐसे प्राणशक्ति के निर्झर स्रोत हैं, जो समूची कायसत्ता और अंतः–चेतना को प्रभावित करते हैं। इन अदृश्य एवं अविज्ञात प्रसुप्त क्षमताओं को जाग्रत एवं उत्तेजित करके साधक स्वयं को ऐसा शक्तिपुंज बनाता है, जो उसे देवोपम बना सके। यही कुण्डलिनी जागरण है और विश्वशक्ति का मानवीकरण भी है [7]।

यज्ञाग्नि एवं कुण्डलिनी

कुण्डलिनी का वर्णन भारतीय परंपरा में एक उच्चस्तरीय ऊर्जा—अग्नि के रूप में किया गया है।

> **मूलाधारादारभ्य ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तं सुषुम्ना सूर्याभा। तन्मध्ये तडिल्लेखा समा मृणालतन्तुसूक्ष्मा कुण्डलिनी।**
> **तत्र तमोनिवृत्तिः तद्दर्शनात्सर्वपापनिवृत्तिः॥**

— मंडल ब्राह्मणोपनिषद् 1/2

मूलाधार से लेकर ब्रह्मरंध्र तक सूर्य के प्रकाश जैसी सुषुम्ना नाड़ी फैली हुई है। उसी के साथ कमल–तंतु समान सूक्ष्म कुण्डलिनी शक्ति बँधी हुई है। उसी के प्रकाश से अंधकार दूर होता है और पापों से निवृत्ति होती है।

इस दिव्य प्रकाश की उपलब्धि और अंधकार की निवृत्ति में योग–साधना का अत्यंत महत्त्वपूर्ण सहयोग है। कहा जा सकता है कि कुण्डलिनी साधना ही वह सुगम और सहज मार्ग है, जिसके माध्यम से समष्टिगत प्राण से स्वयं को ऊर्जावान एवं प्रकाशवान बनाया जा सकता है [8]।

योगाग्नि एवं यज्ञाग्नि से कुण्डलिनी जागरण

दोनों ही अग्नियों—योगाग्नि एवं यज्ञाग्नि—द्वारा कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया होती है। योगशास्त्रों में प्राणायाम एवं योग साधनाओं द्वारा कुण्डलिनी जागरण का वर्णन किया गया है। साथ ही, अग्नि (यज्ञाग्नि) और प्राणवायु के आघात से प्रसुप्त कुण्डलिनी के जागरण का उल्लेख भी मिलता है।

बताया गया है कि मानवीय कायसत्ता में शक्ति का अजस्र भांडागार बीज रूप में प्रसुप्त अवस्था में भरा होता है, जिसे योगाग्नि, प्राणऊर्जा, जीवनी शक्ति, कुण्डलिनी आदि नामों से जाना जाता है। प्राणायाम की विशिष्ट प्रक्रिया उस महाशक्ति के जागरण एवं ऊर्ध्वगमन में विशेष भूमिका निभाती है। कुण्डलिनी जागरण के लिए प्राणशक्ति का प्रचंड आघात आवश्यक होता है। इसके लिए निखिल ब्रह्मांड में संव्याप्त प्राणतत्त्व को आकर्षित करके अपने भीतर भरना पड़ता है [9, 10]।

प्राचीन साधनाशास्त्रों एवं उपनिषदों में अग्नि को जीवन की पवित्रता और ऊर्जा का प्रतीक माना गया है। साधना ग्रंथों एवं उपनिषदों में पवित्र जीवन–अग्नि, पंचाग्नि के रूप में कुण्डलिनी शक्ति का वर्णन है। कठोपनिषद् के यम–नचिकेता संवाद में जिस पंचाग्नि विद्या की चर्चा हुई है, उसे कुण्डलिनी शक्ति की पंचविधि विवेचना कहा जा सकता है। प्रदीप्त अग्नि जिस प्रकार अपने क्षेत्र को उष्ण एवं प्रकाशवान बना देती है, वैसा ही प्रकाश कुण्डलिनी जागरण का भी होता है।

> **योगकुण्डल्युपनिषद् के अनुसार —**
> **अग्नि (यज्ञाग्नि) और प्राणवायु के आघात से प्रसुप्त कुण्डलिनी जाग्रत होती है,**
> **जिससे सहस्रार तक का वेधन संभव होता है और मोक्ष प्राप्त होता है [11]।**

यज्ञाग्नि – योगाग्नि आध्यात्मिक आयाम पर एक ही उच्चस्तरीय ऊर्जा

यज्ञाग्नि, योगाग्नि एवं कुण्डलिनी का विस्तृत स्वरूप

भारतीय विचारधारा में कुण्डलिनी को पिंड तक सीमित न कर ब्रह्मांड तक पाँच आयामों में व्यक्त किया गया है। उसकी व्याख्या, विवेचना और परिभाषा पाँच नामों से की जाती है — (1) प्राणविद्युत, (2) जीवनीशक्ति, (3) योगाग्नि, (4) अन्तःऊर्जा, (5) ब्रह्मज्योति। जैसे–जैसे यह जागरण प्रक्रिया प्रखर होती जाती है, वैसे–वैसे इसके स्तर निखरते–उभरते जाते हैं और एक के बाद दूसरी, अधिक गहरी एवं समर्थ विभूतियाँ प्रकट होती हैं। इस आयाम के अनुसार, कुण्डलिनी का तीसरा नाम है—योगाग्नि। यह तपश्चर्या के आधार पर प्रयत्नपूर्वक प्रकट की जाती है [12]।

इसी तरह कुण्डलिनी को यज्ञाग्नि के परिप्रेक्ष्य में प्राण ऊर्जा से लेकर ब्रह्म ऊर्जा की प्रमुख पाँच अग्नियों द्वारा जागृत (ज्वलंत) किया जाता है। ब्रह्म ऊर्जा के परिप्रेक्ष्य में यज्ञाग्नि, योगाग्नि एवं कुण्डलिनी का स्वरूप विस्तृत हो जाता है। जैसे—

दीप्तिमान अग्नि एवं कायगत प्राणाग्नि — ये दो ही अग्नियाँ शरीर एवं मन के माध्यम से विविध क्रियाकलाप करती देखी जाती हैं। यह अग्नि–संतुलन यदि अस्त–व्यस्त हो जाए, तो मनुष्य निराश, हतवीर्य एवं टूटा हुआ प्रतीत होता है। जीवित होते हुए भी उसमें आशा और स्फूर्ति की चमक समाप्त हो जाती है। ओजस्, तेजस्, मनोबल, आत्मबल, ब्रह्मवर्चस् की दीप्तिमान चिनगारियाँ, जो मनुष्य के क्रियाक्षेत्र एवं भावना–प्रवाह में दिखाई पड़ती हैं, वे मूलतः इन्हीं दिव्य अग्नियों की अभिव्यक्तियाँ हैं। आत्मिकी की भाषा में इसे कुण्डलिनी शक्ति की प्रस्फुटित आभा कहा जाता है [13]।

कुण्डलिनी की तुलना विद्युतशक्ति, ऊर्जा एवं आभा से की गई है। 'तडिल्लता समरुचिर्विचित्रलेखेव भास्वरा' सूत्र में उसे बिजली की लता–रेखा जैसी ज्योतिर्मयी बताया गया है। उसी

प्रकार अन्यत्र उसका उल्लेख 'तडिल्लेखा तन्वी तपनशशि वै–श्वानरमयी' के रूप में किया गया है। उसे प्रचंड अग्निशिखा एवं दिव्य वैश्वानर के समतुल्य कहा गया है [13]।

यज्ञाग्नि में अग्निहोत्र करने, घृतधारा चढ़ाने के पीछे भी अग्नि एवं सोम के संयोग की आवश्यकता का प्रतिपादन है। ब्रह्माग्नि के संयोग को कुण्डलिनी साधना कहा गया है। अग्नि की उत्पत्ति का स्कंद उपाख्यान आता है। सनतकुमार की अग्निजन्य जि–ज्ञासा का समाधान करते हुए महर्षि व्यास कहते हैं—प्रजापति ने सृष्टि के आदि में दिव्य शत वर्षों की अवधि तक महान तप किया। समावेश होने से अग्नि उत्पन्न हुई। वह नीचे गिरा तो भूमि जलने लगी; ऊपर उठा तो आकाश। तब 'भूः भुवः स्वः' शब्द उत्पन्न हुआ। वह शब्द रूप स्फुलिंगों से युक्त, स्वर्णिम आभा वाला परम दिव्य था [14]।

योग साधनाओं एवं यज्ञ अनुष्ठानों में उच्चस्तरीय गाय–त्री साधनाओं का अविच्छिन्न महत्व है। आदिशक्ति गायत्री को त्रिपदा कहा गया है; उसी का सत्–चित्–आनंद स्वरूप—प्राणाग्नि, कालाग्नि एवं योगाग्नि के रूप में त्रिपदा की ऊर्जा व्या–प्त है (तालिका 1)। गायत्री की उच्चस्तरीय साधना द्वारा मू–र्छित पड़ी कुण्डलिनी महाशक्ति का जागरण किया जाता है। सविता की प्राण–साधना इसी लक्ष्य की पूर्ति करती है। कुण्ड–लिनी जागरण की प्रक्रिया के साथ साधक को आत्मपरिष्कार, आत्मसुधार का अवलंबन भी लेना पड़ता है [15, 16]।

इन उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि अग्नि का उच्चस्तरीय स्व–रूप योगाग्नि, यज्ञाग्नि एवं कुण्डलिनी के रूप में अभिव्यक्त होता है।

क्र.सं.	विषय	आधिभौतिक	आधिदैविक	आध्यात्मिक
1	त्रिपदा–गायत्री (आदिशक्ति)	कालाग्नि	प्राणाग्नि	योगाग्नि
2	कुण्डलिनी	प्राणाग्नि, अन्तःअग्नि	योगाग्नि	ब्रह्माग्नि
3	पिण्ड में स्थिति	जीवात्मा	देवात्मा	परमात्मा
4	गायत्री मंत्र की तीन व्याहृतियाँ	भूः	भुवः	स्वः
5	योगाग्नि का प्रयोजन	शरीर निरोगी	चित्त शुद्धि	मोक्ष, कैवल्य, ब्रह्मप्राप्ति
6	यज्ञाग्नि का प्रयोजन	शारीरिक रोग निवारण एवं समर्थता	मानसिक व भावना–त्मक उत्कृष्टता	वातावरण संशोधन
7	यज्ञाग्नि के नाम	आहवनीय	ग्रहपत्य	दक्षिणाग्नि

तालिका 1: त्रिपदा–गायत्री, कुण्डलिनी, योगाग्नि एवं यज्ञाग्नि के त्रिस्तरीय आयाम

यज्ञाग्नि – योगाग्नि: आध्यात्मिक आयाम पर एक ही उच्च–स्तरीय ऊर्जा

भारतीय विचारधारा में हर प्रणाली को तीन आयामों में अभिव्यक्त किया गया है — आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक। योगाग्नि एवं यज्ञाग्नि की उच्चस्तरीय ऊर्जा को भी इन तीन आयामों में समझने के लिए पिंड–ब्रह्मांड की ऊर्जा (गायत्री–कुण्डलिनी) के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक संदर्भ ता–लिका ?? में दिया गया है।

ऋग्वेद के प्रथम मंत्र के प्रथम चरण में यज्ञाग्नि को 'पुरोहित' कहा गया है। यज्ञाग्नि एक उच्चस्तरीय ऊर्जा है। शरीर में यह कु–ण्डलिनी की जागृति (प्राण ऊर्जा) के रूप में कार्य करती है, और ब्रह्मांड में ब्रह्म ऊर्जा के स्तर पर यज्ञाग्नि एवं योगाग्नि एक ही उच्चस्तरीय ऊर्जा को इंगित करती हैं। जैसे—ब्रह्म ऊर्जा अर्थात आदिशक्ति (त्रिपदा गायत्री) का आध्यात्मिक आयाम योगाग्नि है, वहीं यज्ञाग्नि की उच्चस्तरीय ऊर्जा अदृश्य वातावरण (सामूहिक चित्त) का परिशोधन करती है (तालिका 1)।

योग साधनाओं या यज्ञ अनुष्ठानों द्वारा भारतीय विचारधारा में यज्ञाग्नि–योगाग्नि की पिंड से परे ब्रह्मांडीय ऊर्जा के परिप्रेक्ष्य में एक उच्चस्तरीय ऊर्जा के रूप में प्रतिष्ठापना हो जाती है, जिसमें उच्चस्तरीय साधनाओं का योगमय एवं यज्ञमय जीवन का अवलंबन कहा गया है।

निष्कर्ष

योगाग्नि एवं यज्ञाग्नि, दोनों ही भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में उच्चस्तरीय ऊर्जा के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनका संबंध केवल बाह्य अग्नि या प्रतीकात्मक अनुष्ठानों से नहीं, अपितु आंत–रिक चेतना और दिव्यता के जागरण से है। योगाग्नि चित्तशुद्धि, आत्मबल तथा कुण्डलिनी जागरण का माध्यम है, तो यज्ञाग्नि वायुमंडलीय शुद्धि, सामूहिक चित्त के परिशोधन और आंतरिक प्रेरणा को प्रकाशित करने का साधन बनती है।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों अग्नियाँ — योगाग्नि और यज्ञाग्नि — पिंड और ब्रह्मांड, दोनों में व्याप्त ब्र–ह्म ऊर्जा की ही भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। वे परस्पर पूरक हैं और आत्मविकास एवं लोकमंगल के संयुक्त प्रयोजन की सिद्धि में सहायक हैं। कुण्डलिनी शक्ति का जागरण, त्रिपदा गाय–त्री की ऊर्जा का प्राकट्य, तथा आधिभौतिक–आधिदैविक–

आध्यात्मिक क्षेत्रों में संतुलन की स्थापना—इन सभी आयामों में इन अग्नियों की भूमिका अनिवार्य रूप से प्रकट होती है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि इन अग्नियों की परंपरागत एवं तात्त्विक समझ को पुनः व्याख्यायित कर आधुनिक जीवन एवं साधना पद्धतियों में एकीकृत किया जाए, ताकि व्यक्ति और समाज — दोनों स्तरों पर आध्यात्मिक उत्कर्ष संभव हो सके।

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

सन्दर्भ

[1] शर्मा, श्रीराम. कुंडलिनी की योगाग्नि. शांतिकुंज, हरिद्वार: अखंड ज्योति; 2007 अप्रैल।

[2] शर्मा, श्रीराम. यज्ञाग्नि: एक उच्चस्तरीय ऊर्जा. यज्ञ: एक समग्र उपचार प्रक्रिया, भाग–26. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 1982. पृ. 2.1।

[3] शर्मा, श्रीराम. यज्ञाग्नि: एक उच्चस्तरीय ऊर्जा. यज्ञ: एक समग्र उपचार प्रक्रिया, भाग–26. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 1982. पृ. 2.1।

[4] शर्मा, श्रीराम. यज्ञाग्नि: एक उच्चस्तरीय ऊर्जा. यज्ञ: एक समग्र उपचार प्रक्रिया, भाग–26. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 1982. पृ. 2.2।

[5] शर्मा, श्रीराम. यज्ञाग्नि: एक उच्चस्तरीय ऊर्जा. यज्ञ: एक समग्र उपचार प्रक्रिया, भाग–26. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 1982. पृ. 2.7।

[6] शर्मा, श्रीराम. यज्ञाग्नि: एक उच्चस्तरीय ऊर्जा. यज्ञ: एक समग्र उपचार प्रक्रिया, भाग–26. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 1982. पृ. 2.9।

[7] शर्मा, श्रीराम. कुंडलिनी महाशक्ति और उसकी समसिद्. सावित्री, कुंडलिनी एवं तंत्र - अध्याय 5, भाग–15. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 2013. पृ. 73।

[8] शर्मा, श्रीराम. कुंडलिनी महाशक्ति और उसकी समसिद्. सावित्री, कुंडलिनी एवं तंत्र - अध्याय 5, भाग–15. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 2013. पृ. 77।

[9] शर्मा, श्रीराम. कैसे जगाएँ प्रसुप्त अग्नि को. शांतिकुंज, हरिद्वार: अखंड ज्योति; 1992 फरवरी।

[10] झा, पीताम्बर. हठप्रदीपिका. लोनावला: कैवल्यधाम पब्लिकेशन; 2017।

[11] शर्मा, श्रीराम. कुंडलिनी महाशक्ति और उसकी समसिद्. सावित्री, कुंडलिनी एवं तंत्र - अध्याय 5, भाग–15. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 2013. पृ. 74।

[12] शर्मा, श्रीराम. कुण्डलिनी के पाँच नाम पाँच स्तर. शांतिकुंज, हरिद्वार: ब्रह्मवर्चस की ध्यान धारणा।

[13] शर्मा, श्रीराम. कुंडलिनी महाशक्ति और उसकी समसिद्. सावित्री, कुंडलिनी एवं तंत्र - अध्याय 5, भाग–15. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 2013. पृ. 75–78।

[14] शर्मा, श्रीराम. कुंडलिनी महाशक्ति और उसकी समसिद्. सावित्री, कुंडलिनी एवं तंत्र - अध्याय 5, भाग–15. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 2013. पृ. 80।

[15] शर्मा, श्रीराम. आद्यशक्ति गायत्री, आध्यात्मिक उत्कर्ष के सोपान–योग और तप. शांतिकुंज, हरिद्वार: अखंड ज्योति।

[16] शर्मा, श्रीराम. गायत्री साधना से कुण्डलिनी जागरण. विचार क्रांति; 1991. पृ. 2.8।